

**I-2317**

**B.Sc. (II<sup>nd</sup> Semester)**

**Examination, May-June, 2025**

**HINDI LANGUAGE - I**

**(AEC-03)**

***Time Allowed : Two Hours***

***Maximum Marks : 35***

नोट : दिए गए प्रश्न पत्र में दो खण्ड हैं। खण्ड (अ) एवं (ब) के सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

**खण्ड-अ**

**(वस्तुनिष्ठ / बहुविकल्पीय प्रश्न)**

**Q. 1.** सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

**5×1=5**

सही उत्तर का चयन कीजिए :

(i) 'भोलाराम का जीव' के रचनाकार हैं :

(अ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(2)

(ब) हरिशंकर परसाई

(स) जयशंकर प्रसाद

(द) सुमित्रानंदन पंत

(ii) कमल का पर्यायवाची है :

(अ) वारिद

(ब) पीयूष

(स) पंकज

(द) जलधि

(iii) स्वागत का संधि-विच्छेद होगा :

(अ) सु + आगत

(ब) स्व + आगत

(3)

(स) सु + गत

(द) स्वा + गत

(iv) Ambassador का हिन्दी रूपान्तरित पदनाम है :

(अ) राजपूत

(ब) राजपत्रित अधिकारी

(स) राजदूत

(द) राज्यपाल

(v) व्यष्टि का विलोम है :

(अ) तुष्टि

(ब) पुष्टि

(स) संतुष्टि

(द) समष्टि

(4)

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

Q. 2. सभी प्रश्नों के उत्तर 100 शब्दों में दीजिए। 5×2=10

- (i) भारत वंदना कविता का केन्द्रीय भाव लिखो।
- (ii) गांधी जी ने स्वयं के जीवन के माध्यम से धूम्रपान की लत का क्या-क्या कारण बताया है ?
- (iii) भोलाराम की आत्मा कहाँ और क्यों अटकी हुई थी ?
- (iv) उपसर्ग व प्रत्यय की परिभाषा बताते हुए दो-दो उदाहरण लिखिए।
- (v) समश्रुत शब्दों की परिभाषा बताते हुए उदाहरण लिखिए।

खण्ड-ब

(वर्णनात्मक प्रश्न)

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर 350 शब्दों में दीजिए। 4×5=20

Q. 3. 'भारत वंदना' कविता में कवि ने भारतमाता के सौंदर्य व गरिमा को किस प्रकार व्यक्त किया है ?

I-2317

(5)

अथवा

'भोलाराम का जीव' में निहित व्यंग्य के माध्यम से लेखक ने किन-किन समस्याओं को उजागर किया है ?

Q. 4. 'चोरी और प्रायश्चित' के माध्यम से गांधी जी के चोरी, प्रायश्चित व आत्महत्या संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

समास की परिभाषा लिखते हुए प्रकारों को उदाहरण सहित स्पष्ट लिखिए।

Q. 5. लोकोक्ति व मुहावरे में अंतर लिखिए।

अथवा

पारिभाषिक शब्द की परिभाषा लिखते हुए प्रकारों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

I-2317

P.T.O.

(6)

Q. 6. राष्ट्रीय एकता अथवा साइबर क्राइम पर एक निबंध लिखिए।

अथवा

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश तथा उचित शीर्षक लिखिए :

किसी भी कार्य को करने के लिए उत्साह का होना अति आवश्यक है। जीवन एक सतत् संघर्ष है, जिसमें हर समय कोई न कोई कार्य सम्पन्न होता है। प्रायः हम स्वयं से यह आशा करते हैं कि हम अवश्य ही हर कार्य में सफल होंगे। सफलता पाने के लिए जितना परिश्रम आवश्यक है, उतना ही उत्साह भी। हमें मात्र स्वयं को ही उत्साहित नहीं करना होता है, बल्कि अपने साथ अपने आस-पास के लोगों, अपने समूचे परिवेश को उत्साहित करने की आवश्यकता होती है। कभी-कभी ऐसी स्थिति आती है, जो हमें निराशा कर देती है, हतोत्साहित कर देती है। हमारी आंतरिक शक्ति क्षीण हो जाती है, व्यवहार ऐसा हो जाता है कि आस-पास का

(7)

वातावरण और लोग प्रभावित हो जाते हैं। इस समय कोई उत्साही व्यक्ति ही हमें बाहर खींच सकता है। वह अपनी सकारात्मक बातों से हमारी मानसिक शक्ति लौटा सकता है। लोगों में नए साहस व उत्साह का संचार करना और उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित करना एक अमूल्य गुण है, जो सचमुच अनुकरणीय है।

---